कहानी '

''सपना सच हुआ''

–शिव चरण सेन 'शिवा

सेठ कजोड़ीमल जी ने आज लाखों का व्यापार फैला लिया है। सेठ जी एक छोटीसी ढाणी के मूल निवासी थे। ढाणी के लोग इनके विषय में तरह–तरह की चर्चाएं करते और कहते कि–आज वे सेठ जी बने बैठे हैं वो एक अनपढ़ निर्धन परिवार में पैदा हुए थे और उनको गांव के बुजुर्ग ''कजोड़िया'' कहकर पुकारते थे। बुजुर्गों का कहना है कि :–

''कजोड़िया'' प्रतिदिन ढाणी की बकरियाँ चराता और अपने माँ बाप की सेवा करता था। सम्पति के नाम पर उनके पास एक बिस्वा जमीन भी नहीं थी।

प्रतिदिन कजोड़िया ढाणी की बकरियाँ चराने जाता था। किस्मत से उसी ढाणी के रास्ते में साईकिल पर सवार होकर एक मास्टरजी चार–पांच किलोमीटर दूर कस्बे में पढ़ाने जाते थे। इसकी मास्टर जी से रोज भेंट हुआ करती थी। वह उससे रोज ढाणी और उसके बारे में हाल चाल पूछते। वह उनको अपनी गांवड़ैल बोली में सब कुछ सुनाता।

एक दिन कजोड़िया बकरियां चराता चराता रास्तें में एक वृक्ष के नीचें सो गया और नींद में एक स्वप्न देखने लग गया। कुछ देर पश्चात उसकी नींद खुली और देखा कि सामने से वही मास्टरजी आ रहें है। वह बोला ''जे–जे राम '' मास्टरजी। ''जे जे राम'' मास्टर जी ने कहा। उसने मास्टर जी को रोककर कहा–मास्टर जी आज मैने एक स्वप्न देखा। क्या देखा? मास्टर जी सहज भाव से बोले। ''मैने देखा कि मैं एक बहुत बड़ा व्यापारी बन गया हूँ और मेरे कई नौकर–चाकर एवं गाड़ियाँ हो गई है'' मास्टर जी नें उसकी सारी बातें ध्यान से सुनकर बोलें कि – ''तू तो अनपढ़ है। तू यह सब कैसे सम्भव कर सकता है ? क्या कभी सपने सच हुए है।

दो–चार दिन बाद उसके मन में विचार आया कि क्यों नहीं प्रतिदिन मास्टर जी से एक अक्षर सीखा जाय। अगले दिन जब मास्टर जी रास्ते से गुजरने लगे तो उसने रोजाना की तरह अभिवादन किया और बोला कि – ''मास्टर जी आज मैं आप से एक बात पूछना चाहता हूँ।

क्या बात ? मास्टर जी बोलें।

मैं पढ़ना चाहता हूँ, कुछ सीखना चाहता हूँ। आप कितने रुपये लोगे ? कजोड़िया विनम्र भाव से बोला।

मास्टर जी साधारण, ईमानदार, अपने कर्तव्य एवं दायित्व के प्रति समर्पित थे। उन्होने कहा कि–''आजकल पढ़ने लिखने की कोई फीस नहीं है।''

परन्तु तेरी उम्र तो 10–12 वर्ष की है और तेरा प्रवेश भी पाठशाला में नहीं हो सकता। यदि तुम्हारी ढाणी में कोई अनौपचारिक केन्द्र या प्रोढ़ शिक्षा केन्द्र चलता हो तो तू वहाँ जाकर निःशुल्क पढ़ सकता है। मास्टर जी ने कहा।

परन्तु मास्टर जी हमारी ढाणी में तो एक भी पढ़ा लिखा नहीं है। कजोड़िया ने कहा।

मास्टर जी ने कहा– तो फिर तू मुझे रोजाना यहीं मिलना। मैं रोजाना इसी रास्ते से निकलता हूँ। मैं कल तेरे लिए पाठशाला से निःशुल्क स्लेट, पेन्सिल व एक किताब ला दूंगा और रोजाना तुझे एक अक्षर सीखाऊंगा।

अच्छा, मास्टर जी बालक कजोड़िया ने कहा।

कजोड़िया को समझाकर मास्टर जी साईकिल पर बैठे और चले गये। इस प्रकार बालक अगले दिन से बकरियाँ भी चराता और मास्टर जी से एक अक्षर रोजाना सीखता, अभ्यास करता और अगले दिन मास्टर जी को दिखाता। कुछ दिनों तक वह मात्राओं का ज्ञान, गिनती, पहाड़े भी लिखता रहा और मास्टर जी को सुनाता भी रहा। अब तो मास्टर जी उसे तरह–तरह की कहानियों की किताबें अपनी पाठशाला से लाते और उसे देते। कजोड़िया बकरियाँ भी चराता जाता और कहानियों की किताबें भी पढ़ता जाता।

कभी–कभी वह बालक ''कजोड़िया'' कस्बे में भी जाता और अपने घर की दैनिक आवश्यकता की सामग्री भी लाता। एक दिन वह बालक पाठशाला के बाहर एक पानी पतासियों (गोलगप्पे) की छोटी सी दूकान लगाकर बैठ गया। उसकी सारी पतासियाँ (गोलगप्पे) पाठशाला के विद्यार्थी मिनटों में चट कर जाते।

अब तो वह रोजाना पानी पतासियां (गोलगप्पे) बनाकर लाता और पाठशाला के बाहर बेचता। इस प्रकार उसको इतना रुपया मिलता जितना कि बकरियाँ चराने में नहीं। अब वह प्रतिदिन की कमाई को बैंक में जमा करता। इस प्रकार उसकी संचय करने की आदत पड़

गई।

एक दिन उसके मन में किसी के यहां नौकरी करने और अधिक पैसा कमाने की योजना बनी। उसने पानी पतासियां (गोलगप्पे) बेचना छोड़कर उसी कस्बें के एक सेठ जी के यहाँ कपड़े की दूकान पर मुनीम की नौकरी कर ली। वह उस कपड़े की दूकान पर मुनीम गिरी करता और घर का खर्च चलाता। अब तो कजाड़िया जो ढाणी की बकरियों के पीछे जंगल में घूमता था बाहर मीलों से कपड़ा थोक से कपड़ा लाने लग गया। धीरे–धीरे कस्बे में एवं बाहर मीलों सें साख एवं जान पहचान बढ़ गई। मीलों वाले उसे कजोड़ीमल जी कहकर पुकारने लग गए। वह स्वयं भी व्यापार के तौर तरीकों में निपुण हो गया था। जब सेठ जी दो–चार महीनों के लिए कहीं बाहर चले जाते तो वह उनको सारा हिसाब किताब भली प्रकार ईमानदारी से सम्भलाता।

इस प्रकार पन्द्रह वर्ष मुनीम गिरी में बिताने के पश्चात उसने सेठ जी से परामर्श करके पास में एक अलग कपड़े की दूकान खोल ली। ''कजोड़िया'' मुनीम की अच्छी साख ग्राहकी, स्वभाव एवं जान पहचान ने उसकी दूकान के चार चांद लगा दिए। अब तो उसकी दूकान, उसके सेठ जी की दूकान से अधिक चलने लग गई और उसने अपनी दूकान के सामने बोर्ड लगा दिया। कपड़े के थोक विक्रेता ''सेठ कजोड़ी मल''। वह कजोड़िया जो ढाणी की बकरियां चराता था आज वह ''सेठ कजोड़िया जी कपड़े वालें'' के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

सेठ कजोड़ीमल जी ने अपनी ढाणी के बच्चों की पाठशाला के लिए भवन बनवाकर दिया जो उस ढाणी की पीढ़ी दर पीढ़ी उस सेठ कजोड़ी मल जी की प्रशंसा व गाथा गाती रहती है।